"रीतिमुक्त काव्यधारा"

सन् 1643 ई० से लेकर सन् 1843 ई० तक के कालखंड को हिन्दी साहित्य के इतिहास में रीतिकाल के नाम से जाना जाता है। रीतिकालीन काव्य को हिन्दी साहित्य के आचार्यों, विद्वानों व अध्येताओं ने तीन वर्गों — (i) रीतिबद्ध काव्य, (ii) रीतिसिद्ध काव्य और (iii) रीतिमुक्त काव्य' में विभक्त किया है। रीतिमुक्त कवियों को स्वच्छंद कवि भी कहा जाता है क्योंकि इन कवियों ने रीति के बन्धन को स्वीकार नहीं किया, लक्षण ग्रन्थों की रचना नहीं की तथा रीति की जानकारी का उपयोग भी अपने काव्य में नहीं किया अर्थात् रीति के बन्धन से ये कवि पूर्णतः मुक्त रहे, इसलिए इन्हें रीतिमुक्त कवि कहा गया। रीतिमुक्त स्वच्छंद कवियों में घनानन्द, आलम, बोधा, ठाकुर का नाम लिया जाता है। अंग्रेजी साहित्य में स्वच्छंद काव्य को 'रोमांटिसिज्म' के नाम से जाना जाता है।

स्वच्छंदतावादी कविता के अनेक लक्षण विद्वानों ने बताए हैं। जैसे विक्टर ह्यूगो के अनुसार, "ऐसा काव्य जो कड़ियों से मुक्त होता है, स्वच्छन्द काव्य है।" डेटन का मत है कि, "स्वच्छन्दतावादी काव्य में चमत्कार और अनुभूति की प्रधानता होती है।" हिन्दी साहित्य के इतिहास-लेखक आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी का मानना है कि, "स्वच्छन्द काव्य में कल्पना एवं भावावेग की प्रधानता होती है।" जबकि आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार, "स्वच्छन्द

काव्य में प्रकृति का मुक्त रूप और जीवन का सहज प्रवाह दिखाई पड़ता है।" डॉ० मनोहरलाल गौड़ के अनुसार, "स्वच्छन्दतावादी काव्य में अभिनवता एवं ताजगी होनी अनिवार्य है, क्योंकि वह समवर्ती जीवन से प्रेरित होता है।"

उपर्युक्त विद्वानों के मत के आधार पर रीतिमुक्त स्वच्छन्द काव्यधारा के स्वरूप को समझने के लिए उसके निम्नलिखित लक्षण निरूपित किए जा सकते हैं —

* स्वच्छन्दतावादी कवि अन्तर्मुखी प्रवृत्ति के होते हैं।
* उनमें इन्द्रियानुभूति की नहीं बल्कि हृदयानुभूति की प्रधानता होती है।
* रीतिमुक्त स्वच्छन्द कविता में भावावेग का उच्छल प्रवाह रहता है।
* यह मूलतः आत्मप्रधान तथा व्यक्तिपरक होता है।
* यह रूढ़िमुक्त रहता है एवं समवर्ती जीवन से प्रेरित रहता है।
* यह व्यंजना प्रधान होने के साथ-साथ चित्रात्मकता को पुट लिए रहता है।
* इसमें कल्पना की प्रमुखता रहती है।
* इसमें अनुभूति को प्रमुखता दी जाती है, अभिव्यक्ति की कलात्मकता पर अधिक ध्यान नहीं दिया जाता।
* यह भाव प्रधान अधिक होता है और रूप प्रधान कम।

रीतिमुक्त काव्यधारा की विशेषताएँ —

रीतिमुक्त काव्यधारा की निम्नलिखित विशेषताएँ निर्धारित की जा सकती हैं—

(i) रीतिमुक्त कवियों का लक्ष्य हृदय के भावावेगों को मुक्त भाव से व्यक्त करना रहा है।

(ii) इन कवियों ने प्रेमानुभूति की अभिव्यक्ति आत्मपरक शैली में की है।

(iii) रीतिमुक्त काव्य व्यक्ति प्रधान काव्य है। ये कवि अपने व्यक्तिगत जीवन में जिससे प्रेमाहत हुए, उसी की प्रेम कथा का चित्रण इन्होंने अपने काव्य में किया।

(iv) इनके प्रेम वर्णन में नियोग की प्रधानता है। व्यथा को भीतर ही भीतर पी लेने की बात इन्होंने बराबर अपने काव्य में कही है।

(v) प्राचीन परम्परा का त्याग रीतिमुक्त कवियों की उल्लेखनीय विशेषता है।

(vi) इन कवियों के प्रेम में उदात्तता है, ऐन्द्रिक वासना का उसमें लेश मात्र भी नहीं है।

(vii) रीतिमुक्त कवि प्रेममार्ग के वीर पथिक हैं। अपने मार्ग से किसी भी स्थिति में ये विचलित नहीं होते। इनका प्रेम विषम प्रेम है, जिसमें प्रिय की निष्ठुरता तथा निर्दयता का उल्लेख है। रीतिमुक्त कवियों के प्रेम में अनन्यता का गुण भी विद्यमान है।

(viii) रीतिमुक्त कवियों ने लाक्षणिक भाषा का प्रयोग करते हुए अपनी अभिव्यक्ति क्षमता में वृद्धि की है।

(ix) रीतिमुक्त काव्य फारसी काव्य प्रवृत्तियों से भी प्रभावित है। मुक्तक काव्य कला, उपमानों एवं बिम्बों का चयन तथा खण्डिता के वचनों की प्रचुरता फारसी प्रभाव के कारण ही रीतिमुक्त कवियों के काव्य में आया है।